International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 11; November 2017; Page No. 223-228

अब्दुल बिस्मिल्लाह : कथानायक की जीवन दृष्टि एवं स्वरूप

रविशंकर पाठक
शोधार्थी (हिन्दी) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र अब्दुल बिस्मिल्लाह : कथानायक की जीवन दृष्टि एवं स्वरूप पर आधारित है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के लेखन की शुरुआत कविता और कहानी के रूप में एक साथ हुई। प्रारम्भ में उनकी कहानियों का विषय प्रेम हुआ करता था। अपने प्रारम्भिक रचनाकाल में वे बंगला के शरतचंद्र और हिन्दी के जयशंकर प्रसाद से प्रभावित हुए। इसलिए उनकी आरम्भिक प्रेम कहानियों में प्रेम को भावात्मक धरातल पर अभिव्यक्ति मिली है। इस संग्रह की प्रेमपरक कहानियाँ ''मादा सारस की कातर आँखें, पटाक्षेप, जीनिया के फूल और दावत प्रमुख हैं। 'दावत' अब्दुल बिस्मिल्लाह की प्रारम्भिक कहानी होते हुए भी वस्तु और शिल्प के दृष्टि से सशक्त है।
लेखक के निजी अनुभव में उनकी जीवन दृष्टि लोक व्यवस्था के सत्य विधान की ओर शुभ संकेत का मूलाधार है। वे समाज की आन्तरिक कमजोरी पहचानते हैं। इसलिए विस्मिल्लाह जी समानता की नयी रचनाभूमि पर महनीय साहित्यिक मूल्यों को दृढ़ करने की बात सोचते हैं। लेखक की यह बड़ी इच्छा है कि इस समाज में ऊँच–नीच, जाति–पांति, वर्ण, धर्म का भेदभाव मिटाकर हम अन्धविश्वास और रूढ़ियों से मुक्त होकर समाज में यथार्थवाद और मानवतावाद की प्रतिष्ठा करें। अब्दुल बिस्मिल्लाह का निजी अनुभव मानवीय करुणा से ओत–प्रोत और क्रान्तिकारी भावधारा का श्रोत कहा जा सकता है। इस देश में जो जन दलित, उपेक्षित, असहाय तथा भूख से बिलबिलाते हुए जन हैं वे अब्दुल बिस्मिल्लाह के स्नेहभाजन हैं। सचमुच बिस्मिल्लाह के साहित्य सृजन में निजी अनुभव की जीवन दृष्टि उन्नत है। संसार में जहाँ साँस लेने का भी सुविधा नहीं है वहाँ निष्ठुरता है। भारत देश में निश्च्छल प्राणों पर ही लोग प्रहार कर रहे हैं। उनकी दृष्टि में इस देश में केवल स्वार्थ है और वह स्वार्थ जहाँ चाहे जन सेवा हो या चाहे देश सेवा।
अब्दुल बिस्मिल्लाह के सम्पूर्ण कथा साहित्य में उपेक्षित तथा दलित पात्रों के उन्नयन और जनसाधारण की प्रतिष्ठा के प्रति गहरी आस्था के दर्शन होते हैं।

मूल शब्द : अब्दुल बिस्मिल्लाह, कथानायक, जीवन, रचना, समाज, मनोविज्ञान, दृष्टि एवं स्वरूप।

प्रस्तावना
अब्दुल बिस्मिल्लाह का रचना संसार वैविध्यपूर्ण है। उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। इनके सम्बन्ध में यह उक्ति चरितार्थ है – ''समकालीन साहित्य में आला, हरफन मौला, अब्दुल मतवाला, यह सिद्ध करती है कि जन साधारण में उनके रचना संसार के प्रतिभा का गौरव गुन्जायमान है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के अनगढ़ सगढ़ व्यक्तित्व की भाँति उनकी रचना प्रतिभा लक्ष्य का द्वार खोलती है। समकालीन रचनाकारों ने अब्दुल बिस्मिल्लाह एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य में एक नया स्वरूप विकसित किया है। बिस्मिल्लाह जी की प्रतिभा का बड़ा व्यापक रूप एवं उनकी शैली की विविधता में अवलोकनीय है। उनकी रचनाओं में भारत के जनजीवन की जान समाहित है। उनके उपन्यास 'समर शेष है' में उन्होंने लिखा है कि ''संघर्ष केवल वह नहीं है जो चंद खास लोगों और चंद आप लोगों के बीच होता है। संघर्ष किसी आदमी का जीवित रहना भी है। जब वह खुद से ही लड़ता है और खुद से निपटता है खुद से ही हारता है और खुद से जीतता है। इस तरह आदमी का एक इतिहास है।''[1]
इसी प्रकार साहित्यकार बिस्मिल्लाह की रचनाओं में संवेदनशीलता, गम्भीरता और उनके विनोदी स्वभाव के दर्शन होते हैं। मानवतावादी दृष्टि की झलक ''उनकी झीनी–झीनी बीनी चदरिया'' में देखी जा सकती है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र मतीन है। लेखक ने अभावग्रस्त बुनकरों की समस्या का वर्णन किया है। इन बुनकरों ने मतीन, अलीमुन, अल्ताब, बशीर की दशा देखकर हमारा अन्तस झकझोर देता है। ''इस उपन्यास में अनेक पात्र ऐसे हैं जो टूटकर भी साबुत हैं, और वह कबीर की तरह ही हालात से समझौता नहीं करते। उल्लेखनीय है कि लेखक को इस उपन्यास ने उन्हें रेणु और प्रेमचंद की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया है।''[2]
'जहरवाद' उपन्यास में उपेक्षित तथा विषमता को उजागर करने का काम उपन्यासकार ने किया है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने इस उपन्यास में भारतीय ग्रामों के अंतर्गत जो आजादी के पश्चात भी जानवरों जैसा जीवन–यापन कर रहे हैं, उनका सशक्त चित्रण तो किया है। उसके साथ–साथ उनके रोजमर्रा के जीवन में घटित होने वाले हर दुःख दर्द, आनंदोत्सव तथा विभिन्न समस्याओं को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।
दन्त कथा उपन्यास का नायक एक मुर्गा है जो मनुष्य के हत्यारी नियत को भाँपकर अपनी प्राणरक्षा के लिए एक नाबदान में घुस जाता है। उसका शरीर उस नाबदान से बड़ा है। फिर भी वह प्रयत्न करते अपनी जान बचाने के लिए अंदर घुस जाता है। वह एक स्वाभिमानी मुर्गा है। उसने मनुष्य को बहुत ही नजदीक से पहचाना है। उसके मन में मनुष्य के प्रति नफरत है। वह कहता है मैं इस नाबदान में घुसकर मर जाऊँगा मगर इस पापी मनुष्य प्राणी के हाथों लगकर मैं जिबह नहीं होना चाहता क्योंकि जिबह करने के बाद उसने मुर्गे की स्थिति को देखा था..... ''वह फुट–आध–फुट उछलता है और बुरी तरह छटपटाता है। उस मुर्गे की दशा उस आशिक की तरह होती है, जिसे जिबह कर दिया हो। शायद इसीलिए मनुष्य जाति के कवियों ने आशिक की तुलना 'बिस्मिल' यानी जिबह हुए मुर्गे से की है।''[3]
'मुखड़ा क्या देखे' यह अब्दुल बिस्मिल्लाह का बहुचर्चित उपन्यास

माना जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिकता का भी चित्रण किया है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह जी के अब तक पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं – (1) टूटा हुआ पंख, (2) कितने–कितने सवाल, (3) रैनबसेरा, (4) अतिथि देवो भव और (5) जीनिया के फूल।

'टूटा हुआ पंख' इस कहानी संग्रह में 'नन्हीं–नन्हीं आँखें' अपना–अपना अंत, शून्य की ओर, कच्ची सड़क, शीरमाल का टुकड़ा, तीर्थयात्रा, पागलों वाली सेल, टूटा हुआ पंख आदि कहानियाँ सम्मिलित की हैं। इन कहानियों में प्रेम प्रसंग, सामाजिक प्रश्न, धार्मिक, छुआछूत, राजनीतिक आदि सभी प्रश्नों का चित्रण मिलता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की प्रेमपरक कहानियों में प्रेम का युटोपियन ट्रीटमेंट नहीं है। उनकी कहानियों में प्रेम अपने स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ है। जैसे– नन्हीं नन्हीं आँखों की मुन्ना और सोना के प्रेम में बाल सुलभ प्रेम के दर्शन होते हैं। जब उन्हें मालूम होता है कि एक लड़का और एक लड़की को लेकर जबलपुर में हिन्दुओं–मुसलमानों में लड़ाई हो गई है और अब डिंडौरी के हिन्दू आसपास के मुसलमानों को मारने के लिए इधर आ रहे हैं तो वे बेहद डर जाते हैं। सोना को जब पता चलता है कि लड़की को बच्चा भी होने वाला था तो वह डर जाती है और पूछती है, ''तो क्या मुझे भी बच्चा होगा?'' ये अबोध बाल प्रेमी जीवन की वास्तविकताओं से अनभिज्ञ होने के कारण यह निष्कर्ष नहीं निकाल पाते कि प्रेम के बीच 'धर्म' क्यों आड़े आ जाता है। वे इसका कारण भी नहीं जान पाते कि ''बुरा काम सिर्फ दो लोगों ने किया और इतने लोग मार–काट क्यों कर रहे हैं?''[4]

'टूटा हुआ पंख' इस कहानी से साफ पता चलता है कि रिश्ते स्वार्थ पर आधारित होते हैं। ससुराल वालों के दिल में दामाद के प्रति आदरभाव तभी तक रहता है। जब तक उनकी लड़की जीवित है या उसे दामाद चाहता है। लड़की के मरते ही रिश्ते अस्वाभाविक रूप से टूट जाते हैं। इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी कहानियों में सामाजिक पहलुओं को चित्रित किया है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह ने 'कितने–कितने सवाल' इस कहानी संग्रह में अलग–अलग कहानियों में विविध पहलुओं को और उसमें पैठी हुई समस्याओं का पर्दाफाश किया है।

'रैन बसेरा' कहानी संग्रह में संकलित पगला राजा, खिलाड़ी, विदूषक, दंगाई, कागज के कारतूस, खुशी, लफंगा, पुरानी हवेली और बैरंग चिट्ठी आदि कहानियाँ हैं।

'रैनबसेरा' यह कहानी शिल्प और संवेदना के स्तर पर एक मार्मिक कहानी बन गयी है। इस कहानी में नायिका 'संबुल' न तो प्रेम का मतलब जानती है, और न ही अपने नम पर हो रहे व्यापार को। 'संबुल' की माँ युवा यात्रियों को अपने 'रैनबसेरे' में ठहराकर, शादी का प्रलोभन देकर उनसे रुपये ऐंठती है। वह सोचती है ''अगर इसी तरह एकाध यात्री मेहमान और आ जाय। 'रैनबसेरा' में तो हमारे दिन कट जाएँ।''[5]

'अतिथि देवो भव' कहानी संग्रह में प्रमुख रूप से अलिया धोबी और पाव भर गोस्त, सिद्दीकी साहब, अभिनेता, पुण्यभोज, खाल खींचने वाले, आधा फूल आधा शव, यह कोई अुत नहीं, ग्राम सुधार और 'अतिथि देवो भव' आदि कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'जीनिया के फूल' की प्रेम को भावनात्मक धरातल पर अभिव्यक्ति मिली है। दूसरी अन्य कहानियों में समाज और जीवन के जटिल सम्बन्धों की जाँच पड़ताल की गयी है। इस संग्रह की प्रेमपरक कहानियों में 'मादा सारस की कातर आँखें', 'पटाक्षेप', 'जीनिया के फूल' और 'प्रथम प्रसव', 'दावत' प्रमुख हैं।

इस तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि सभी समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

रचना का सार वस्तु की दृष्टि से मैंने अब्दुल बिस्मिल्लाह के रचना की कथावस्तु के परिप्रेक्ष में यह अनुभव किया है कि अब्दुल बिस्मिल्लाह के सास जीवन–जगत का विस्तृत अनुभव है। यह अनुभव उनका भोगा हुआ भी है और बहुत पास से देखा हुआ भी। समाज का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ उनकी नजर न पड़ी हो। जिसकी पूछ उठायी वह मादा निकला की तरह अब्दुल बिस्मिल्लाह की नजर जहाँ–जहाँ पड़ी है वहाँ वर्णगत, जातिगत–भेद और सामाजिक आर्थिक वैषम्य के सिवा कुछ नहीं दिखाई पड़ा है।

रचना और समाज

रचनाकार का व्यक्तित्व अनेक विविधताओं का केन्द्र बिन्दु होता है। रचनाकार के व्यक्तित्व का निर्माण अनेक संस्कारों, परिस्थितियों, प्रभावों और गत्यात्मक अनुभूतियों आदि से मिलकर होता है। मानव के मानसिक, शारीरिक शक्तियों का वातावरण की प्रक्रिया से सक्रिय हुआ संस्त्रस्ट रूप ही व्यक्तित्व है। रचनाकार का जीवन मूल प्रवृत्तियों एवं सहज प्रवृत्तियों द्वारा संचालित होता है। मनोविश्लेषण की नवीन विचारधारा के प्रतिपादक सिगमण्ड फ्रायड ने अचेतन मन को व्यक्तित्व का केन्द्र माना है। अचेतन की सत्ता का चेतन मन पर गहन प्रभाव पड़ता है।

फ्रायड के विचार के अनुसार – ''व्यक्तित्व के तत्व काम वासनाओं, पैतृक प्रवृत्तियों के निर्धारण और पैतृक प्रवृत्तियों के तदरूप निर्माण से निर्मित होते हैं। फ्रायड के विचारों में प्रवृत्तियाँ अधिकतर यौन सम्बन्धी होती हैं।''[6]

फ्रायड के अनुसार, ''लिविडो'' अर्थात कामशक्ति को वे जीवन का आधार और मूल वृत्ति मानते हैं। यह व्यक्तित्व निर्मित में प्रमुख शक्ति है। फ्रायड के दृष्टिकोण से सृजन क्रिया एक विकारात्मक प्रक्रिया है, यथार्थ से असन्तुष्ट कलाकार, कला में प्रतीकात्मक रूप में अपने व्यक्तित्व का प्रक्षेप करता है। फ्रायड के मतानुसार – ''The Relation of the poet to day dreaming called from readers.''

अभिप्राय यह है कि शैशवीय क्रीड़ा वृत्ति वयस्क व्यक्तियों में कलात्मक सर्जन के रूप में परिणत हो जाती है। जब व्यक्ति बड़ा होता है और शैशव के खेल के स्थान पर उसमें यथार्थ के प्रति विशेष अन्य मनस्कता परिलक्षित होने लगती है तो अपनी मनःस्थिति में तल्लीन हो जाता है। इस मन सृष्टि में ही वह आत्मतोष की अनुभूति करता है। अचेतन मस्तिष्क को ही फ्रायड कला का स्त्रोत मानता है।

फ्रायड ने जहाँ काम वृत्ति को व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष विवेचित किया वहीं ''अरविन्द'' ने उसका विरोध करते हुये बताया है कि ''कमल के सौन्दर्य का विश्लेषण हमें कीचड़ में नहीं मिल सकता ठीक उसी प्रकार जीवन के सौन्दर्य का विश्लेषण काम वृत्ति में नहीं मिल सकता।''[7]

''महर्षि अरविन्द'' अवचेतन का भी मानवीय व्यक्तित्व में स्थान स्वीकार करते हैं, किन्तु वे ''अतिचेतन'' को व्यक्तित्व का प्रमुख और महत्वपूर्ण भाग मानते हैं। इसलिये मानव को अति मानव में रूपान्तरित करना उसका लक्ष्य रहा है।

यदि इन सब विचारकों – विशेष रूप से ''फ्रायड की काम–वृत्ति'' के साथ अरविन्द के आध्यात्मिक पक्ष का समावेश किया जा सके तब हम व्यक्ति और व्यक्तित्व तथा रचना और रचनाकार को एक व्यापक दृष्टि से समझने व परखने में समर्थ हो सकेंगे। हमारे विचार से ''रचना और व्यक्तित्व'' के विश्लेषण की यह एक व्यापक निष्कर्ष बन सकती है।

रचनाकार समाज का विशेष प्राणी है। उसकी अन्तर्दृष्टि असाधारण और प्रखर होती है। सभ्यता के आरोह अवरोह से छनकर उसका निर्माण होता है। ''रचना और समाज'' के परिप्रेक्ष्य में डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय का विचार स्पष्ट है, ''साहित्यकार समाज का प्रतिनिधि संदर्भ और साथी है। वह देवलोक से आया मसीहा और देवदूत नहीं। वह जरा मरण की सीमाओं में आबद्ध है। वह हम सबका जीवन जीता है वह एक अनुभूतिक सत्ता है। उसमें रचनात्मक प्रज्ञा और उन्मेष शालिनी कल्पना होती है। जीवन प्रकारों से वह मूल्य ग्रहण करता है।''[8]

हमारे प्राचीन कवि को अपने चारों ओर के समाज और उसकी व्यवस्थाओं में कहीं कुछ अन्यायपूर्ण स्थिति नहीं दिखायी देता था। सामाजिक व्यवस्था में किसी प्रकार के परिवर्तन की कामना करना उसके संस्कार में ही नहीं था। इस विश्वास का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा है। शिव कुमार मिश्र ने रचनाकार और प्रतिबद्धता के प्रसंग में रचना और समाज का अनुशीलन किया है उनकी दृष्टि में – साहित्य मानवीय मस्तिष्क के सबसे तेजस अंश की वाणी मानवीय क्षमता का सबसे अधिक निखरा हुआ सौन्दर्यमय प्रतिफलन है और साहित्यकार भी समाज का जागृत प्रबुद्ध सदस्य है। वह दृष्टा भी हो सकता है अतीत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों इकाइयों के सूत्र अपने हाथों में सम्भालने वाला तथा युग जीवन की धधकती हुयी आग की लपटों के बीच भी, बिना आंच लगे प्रशस्त तथा उच्चतर भूमियों की ओर ले जाने वाला आदि उसकी सर्जन क्षमतायें उसकी दृष्टि उसका मानस वह ऊर्जा वह बोध और वह सम्वेदना पास के जिसने भारत ही नहीं– विश्वभर में शताब्दियों से अनेक द्रष्टा कलाकारों को जन्म दिया है।''[9]

प्रत्येक युग में यह इतिहास द्वारा लायी गयी वह स्थिति है जिसे सच्चे कलाकार को स्वीकार करना ही पड़ता है। हमारे वे पूर्ववर्ती जिनका उत्तराधिकारी बनने में हम गर्व का अनुभव करते हैं। इस स्वीकृति के सन्दर्भ में ही बड़े तथा महान बन सके थे। वे साहस के साथ घोषित करते हुये पक्षधर बने उसी मनुष्य के पक्षधर जो तब से लेकर आज तक एक नये स्वस्थ जीवन के लिये लड़ रहा है उस इतिहास तथा ''समाज रचना'' के पक्षधर जो आज हमारा प्राप्य है। प्रगतिवादी साहित्य में रचनाकार ''स्व'' का हिमायती रहा है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह का रचना और समाज इसी का साक्षी है। नये इतिहास, नयी समाज रचना, नयी मानवता तथा नये मानव के हिमायती कला हमारी सीमाओं में ही जन्म ले सकती हैं। ऐसी उनकी मान्यता थी।

डॉ. कमला प्रसाद की मान्यता यह भी रही है कि ''कोई भी काव्य समाज से अलग नहीं है। स्वस्थ, स्वच्छन्द भावधारायें भी वैयक्तिक चेतना के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना में अभिव्यक्ति और प्रसार पाती है। समाज का प्रभाव काव्य में कहीं तो सायास दिखायी पड़ता है और कहीं उच्छिन्न रूप में।''[10]

बिस्मिल्लाह की रचना जाति–पांति तोड़क के स्थान पर जाति–पांति योजक दृष्टिकोण स्थापित करना चाहती हैं। लेखक के अनुसार शुद्धत्व हमारे समाज का प्रबल संस्कार है। इस प्रकार रचना और समाज की दृष्टि से अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनाधर्मिता समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण कहा जा सकता है। समाज के प्रति बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य सृजन मौलिक तथा उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा है। बिस्मिल्लाह जी ने वर्तमान समाज की भ्रष्ट व्यवस्था में आम आदमी का शोषण किस प्रकार होता है उसका यथार्थ चित्रण किया है। जब मनुष्य आदर्श और नैतिकता को लेकर समाज में कोई काम करता है तो सभी लोग उन्हें मूर्ख मानते हैं। इसलिए मूर्ख व्यक्तियों को मूर्ख बनाकर ही अपना काम निपटाना उचित है।

कुल मिलाकर यह कहना उचित होगा कि रचना और समाज का सृजन बिस्मिल्लाह की रचनाधर्मिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। समकालीन कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनाधर्मिता समाज की समग्र उपलब्धियों से परिपुष्टि कही जा सकती है।

रचना और मनोविज्ञान

संवेदनशील अनुभूतियाँ रचना में मात्र आन्तरिक प्रस्फुटन से विकसित नहीं होती उसका एक पक्ष बाह्य निरूपण का स्तर भी है। यह वाह्य स्तर मानव जीवन के उस सत्य से सम्पृक्त है जिसमें सम्पूर्ण मानव की अन्तर्वेदना रचनाकार के अन्तर्वेदना से सम्बद्ध होकर व्यक्त होती है। युग की प्रवृत्ति उस समष्टि के सुख दुःख, अभिशाप वरदान, राग–अनुराग, से रचनाकार के वैयक्तिक जीवन को सम्बद्ध एवं सम्वलित करती है और हम उससे संचालित एवं प्रभावित होते हैं। हमारा व्यक्तित्व विचारणा, धारणा, अनुभूति के स्तर, बोधगम्यता के आधार पर विराट मानव की भक्तिव्यता के प्रति उन्मुख होती है। उससे द्रवित होती है।

मानव व्यक्तित्व की सामूहिक वेदना देशकाल की सीमाओं में विविध स्वरूपों के माध्यम से व्यक्त होती है। इस व्यक्तित्व की अनुभूति ने रचना को मानवी चेतना को सर्वथा नया स्तर दिया है। कवि अथवा लेखक मानव जीवन की विषमता को अनुभूतियों की गहराई में पिरोया है। यह अनुभूति एक मनोवैज्ञानिक स्तर है। जहाँ रचनाकार छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, समकालीनता के भाव क्षेत्र से व्यापक यथार्थ की ओर अग्रसर होते हैं।

प्रत्येक रचनाकार इन्हीं मनोवैज्ञानिक भाव–भूमि पर प्रतिष्ठित होकर अपने वैयक्तिक चरित्र और अपने जीवन समग्र के वातावरण एवं परिस्थितियों का विवेचन किसी न किसी प्रकार अपनी रचना में व्यक्त करता है। अपनी आत्मानुभूति के माध्यम से वह वातावरण को कुछ न कुछ देता रहता है। लेखक अथवा कवि अपने भावों को नये सम्भावनाओं के साथ व्यक्त करता है। इस भाव सम्भावनाओं में जिस मनोवैज्ञानिक सोच का समन्वित रूप होता है उसे हम भावान्तरण की प्रक्रिया स्वीकार कर सकते हैं।

रचना और मनोविज्ञान के लिये जो आधार भित्ति रूप में रचनाकार को प्राप्त होता है– उसे हम कवि संवेदन भावनाओं का आत्म साक्षात्कार की परिधि में रख सकते हैं। कवि कल्पना स्वतः विचार के आश्रित रहती है। विचारों के पृष्ठभूमि में अनुभव का महत्वपूर्ण अवदान होता है। ये विचार सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों से विकसित होते हैं। उनमें व्यक्ति के आन्तरिक और वाह्य जीवन के विविध आन्तर्भावों की प्रस्तावना निहित रहती है। सर्जक का यह भाव बोध मनोवैज्ञानिक भावों के आधार पर सर्जित एवं विसर्जित होते रहते हैं।

कवि की रचनाभूमि की पृष्ठभूमि में रूढ़िगत मान्यताओं की अस्त–व्यस्त सामाजिक परम्परा, मानव आत्मा की अवसादित भावनायें, द्वन्द्वात्मक भौतिक, जीवन, शोषण की प्रवृत्ति, असमानता, पाखण्डवाद, वैयक्तिक पीड़ा बोध, मानवतावादी दृष्टि के साथ रागात्मक अनुभूतियाँ निहित हैं। जिसने आत्मानुभूति और अहम् निष्ठा को जागरूक बनाया है। रचना के मनोवैज्ञानिक अनुभूतियों के आधार पर रचनाकार के काव्य मूल्यों को हम निम्न रूपों में देख एवं समझ सकते हैं – आत्मानुभूति परक भावबोध, विद्रोहात्मक मनःस्थिति, विवेचन प्रवृत्ति, अहं की भावना, वैयक्तिक निष्ठा, यथार्थ और कल्पनानुभूति, बौद्धिक जागरूकता, परिचर्तित जीवन संदर्भ की मनःस्थिति, आत्मविवेक और आत्मा विवेचना, संवेदनशील अनुभूति, चेतनापूर्ण विवेक, आन्तरिक संघर्ष, काम चेतना, आत्म चेतना, अन्तर्द्वन्द्व।

इस प्रकार बिस्मिल्लाह के साहित्य में मनोविज्ञान रूप येनकेन रूपेण परिव्याप्त है। सामाजिक चेतना के स्तर पर कवि का यथार्थ बोध

आत्मप्रेरित है। उनका मानना है कि साहित्य कला और कविता के क्षेत्र में बिना मानव सत्य की उपलब्धि को स्वीकार किये रचना के काव्यगत सौन्दर्य का रूप विकसित नहीं होता। इसे हम मनोवैज्ञानिक सत्य एवं अनुभूति के रूप में स्वीकार करते हैं।

मनोविश्लेषण के नवीन विचारधारा के प्रतिपादक ''फ्रायड'' के अनुसार, समग्र मानव व्यक्तित्व ''इड'', ''इगो'' और ''सुपर इगो'' ये तीन मूलभूत तथ्य हैं। स्वस्थ और साधारण (नार्मल) व्यक्तियों में इन तीनों का एकीकृत एवं संगठित रूप रहता है। व्यक्ति को ये तीनों स्तर संतोषजनक ढंग से कुशलतापूर्वक व्यवहार करने को बाध्य करते हैं।''[11]

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स की धारणायें भारतीय विचारधारा के समान ही निरूपित की जा सकती हैं। 'जेम्स' ने मानवीय अहं की चार मूलभूत तथ्यों की ओर संकेत किया है। भौतिक अहं, सामाजिक अहं, बौद्धिक अहं तथा परात्पर अहं। ''परात्पर अहं'' तीनों का नियंत्रक है। ''जेम्स'' के इस ''परात्पर अहं'' तथा उपनिषदों के विचार में साम्य है, क्योंकि जहाँ ''जेम्स'' के लिये ''परात्पर अहं'' कल्पना और चिन्तन का विषय है वहाँ उपनिषदकारों के लिये विज्ञानमय और आनन्दमय कोष उनके अनुभव के तथ्य हैं जिन्हें उपलब्ध करने का पूर्ण उपाय भी बतलाया गया है।[12]

पाश्चात्य साहित्यकारों में ''गेटे'' की रचना में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार को कविता का सर्वस्व माना है।[13]

इलिएट के अनुसार कवि प्रभाव और अनुभूति के समन्वित रूप को रचना में प्रस्तुत करता है।[14]

''एडलर'' की मान्यता है कि – ''कलाकार भी हीन भाव से पीड़ित होने के नाते क्षतिपूर्ति के लिये ही सर्जन करता है।

''कार्ल युंग'' के मतानुसार सामूहिक अवचेतन एक ऐसी मानसिक चित्रवृत्ति है, जो वैश परम्परा की शक्तियों से निर्मित होती है। जिस प्रकार मानव के शारीरिक संघटन में पूर्ववर्ती विकास के चिन्ह विद्यमान रहते हैं। उसी प्रकार उसके मानसिक स्तर में भी जाति विकास की विशेषतायें पाई जाती हैं।''[15]

अब्दुल बिस्मिल्लाह के समग्र उपन्यास और कहानियों में यथा प्रसंग मनोवैज्ञानिक धारणाओं से अनुस्यूत हैं। लेखक ने आत्मकथात्मक प्रसंग की विभिन्न मानसिक स्थितियों के अनुकूल तरह–तरह के घात प्रतिघात, हृदय की तथाकथित दुर्बलतायें और आन्तरिक गूढ़ रहस्य बड़ी निष्कपटता, बड़े सोत्साह और स्पष्टता के साथ प्रकट हुये हैं।

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में मनोविश्लेषण की प्रवृत्ति अपनाई गई है। यही कारण है कि इनकी कृतियाँ तीव्र संवेदना एवं भाव के स्तर पर खरी उतरती हैं। मनोविज्ञान में भी भाव के दो ही रूप माने जाते हैं – संवेग (सेन्टीमेन्ट) एवं भावना (इमोशन)।

भावों का यह वर्गीकरण सर्वप्रथम ''शैण्ड'' ने किया।[16] मनोविज्ञान वेत्ताओं ने इन दोनों इमोशन तथा सेन्टीमेन्ट के अन्तर की ओर संकेत किया है। संवेग भावानुभव की प्रवृत्यात्मक उत्तेजनात्मक अवस्था है।[17] जबकि भावना वह व्यवस्थित स्थिर भावात्मक प्रवृत्ति या मनोदशा है जो किसी वस्तु विशेष के प्रति जागरित और उन्मुख होती है।[18]

मनोवृत्ति एक व्याप्त मनः स्थिति मात्र है, जिसके समग्र रूप का अनुभव रचनाशिल्प में होता है। मनोवृत्ति सदैव विचारमूलक होती है। अतएव रचना और मनोविज्ञान पक्ष पर विचार करते हुये यह कहना असंगत न होगा कि रचना सृजन में मनोवैज्ञानिक दृष्टि का संयोजन सम्भाव्य ही वरन अनिवार्य भी है। आज के विकसित मनोविज्ञान के संदर्भ में रचना का औचित्य और प्रमाण्य सिद्ध होता है।

निजी अनुभव का विकास

अब्दुल बिस्मिल्लाह का सृजनात्मक लक्ष्य है मानव की प्रतिष्ठा तथा उसके आन्तरिक सद्भाव और यथेष्ट वृत्ति में आस्था। यही बिस्मिल्लाह की साहित्यिक क्रांति है। उनका मत है कि भारतीय साहित्य में मानव समानता की ऐसी प्रबल भावना व्यक्त हुई है जैसी यूरोप के साहित्य में दुर्लभ थी। भारतीय संस्कृति पर गर्व करने का सही तरीका यह नहीं है कि सामाजिक रूढ़ियाँ धार्मिक अंधविश्वासों से हम चिपके रहे जो भूत प्राय हैं उसे पूजते रहें। सही तरीका यह है कि हम उन पर गर्व करें जिन्होंने इन रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया है। अपने कार्यों से हम उनकी क्रान्तिकारी परम्परा को आगे बढ़ायें।

डॉ. रामविलास शर्मा ने एक लेख में लिखा है – ''रीति–रिवाजों में हिन्दुओं से सम्पूर्णतः पृथक मुसलमान जाति भी साहित्य और ज्ञान की भूमि में हिन्दुओं के समान ही है। कबीर, तुलसी, नजीर, गालिब, मीर आदि कवियों की रचनाओं से अनेक अंश उद्धृत करके वेदान्त की भूमि पर उन्होंने हिन्दू मुस्लिम कवियों का भाव साम्य प्रदर्शित किया।''[19]

बिस्मिल्लाह ने साहित्य के सम्बन्ध में जो मान्यतायें प्रस्तुत किया है वे आदर्शवाद की विरोधी और साहित्य में यथार्थवाद की पोषक थीं। बिस्मिल्लाह के निजी अनुभव इस संसार से दूर किसी कल्पना लोक की उपज नहीं है। भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य की यथार्थ समस्याओं से उनका बहुत गहरा सम्बन्ध है। उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों, पौराणिक देवी–देवताओं के प्रति अन्ध श्रद्धा, मूर्ति पूजा, साम्प्रदायिक भेद–भाव, शूद्रों के अत्याचार का विरोध किया, मनुष्य मात्र के समानता की घोषणा की। इस सारी कार्यवाही को उचित ठहराने के लिये दार्शनिक तर्क प्रस्तुत किये।

बिस्मिल्लाह की रचनाओं से स्पष्ट है कि शूद्र और द्विज सभी वर्णों के निर्धन किसानों की एकता जरूरी है और इन किसानों से शहर के शिक्षित युवकों का सहयोग आवश्यक है।

कथानायक का आत्मकथात्मक दृष्टिकोण

अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचना प्रक्रिया का स्रोत है उनका भाव बोध। यह भाव बोध उनकी विचारधारा से सम्बद्ध है, किन्तु उसका प्रतिबिम्ब नहीं है। बिस्मिल्लाह का स्वाधीनता प्रेम उनके साहित्य में अप्रत्याशित नये नये रूपों में व्यक्त होता है। उनकी आस्था के प्रतीक अनेक हैं। उनका अधिष्ठान एक है। उनकी दार्शनिक मान्यतायें अनेक अन्तर्विरोधों को पार करती हुई नारी और प्रकृति के मोहक चित्रों के साथ साहित्य में व्यक्त होती हैं। नये मानवतावाद के प्रतिष्ठापक बिस्मिल्लाह के साहित्य में निरन्तर संघर्षशील निजी अनुभव का विकास, उनके काव्य का उनकी भावधारा को विवेचित करता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की साहित्यिक परम्परा के परिदृश्य में आत्मकथात्मक प्रसंगों का आना नये साहित्यिक मूल्यों की तलाश ही था। उन्होंने अपने कथा साहित्य में व्यक्तिगत घरों से घिरी हुई अनेक कथायात्राओं के अनुकूल नये अनुभव चरित्रों को उपस्थित किया है। उनकी दृष्टि में नये रचना भूमि का अनुभव बहुत निजी और आत्मकथात्मक होता है। अभिव्यक्ति के स्तर पर अपना प्रत्येक अनुभव अपने जैसे अन्य रूपों की तलाश भी करता है। और यह इसलिये होता है कि वह स्वर्कोपर की समग्रता में प्रस्तुत कर अस्मिता और शक्ति को पाना चाहता है। वह अलग व्यक्ति होता है लेकिन रचना के माध्यम से अपने खण्ड जीवन को किसी दूरस्थ स्थित व्यक्ति समूहों से जोड़कर पूर्णता पाना चाहता है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह का आत्मकथात्मक दृष्टिकोण कुछ इस तरह का ही था। वे अपना अनुभव दूसरों को देते थे और दूसरों के अनुभव

को अपने विचारों की कसौटी पर कसते थे। आवश्यकता पड़ने पर उसकी प्रतिक्रिया करने में संकोच नहीं करते थे। निश्चित रूप से रचनात्मक अनुभव की यातना रचनाकार अकेले भोगता है। बाद में दूसरों से उसकी साझेदारी सामाजिक संवेदनशीलता के स्तर पर होती है। रचनाकार की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह शब्द की अर्थवत्ता और अपनी प्रासंगिकता को बनाये रखता है।

स्थायित्व के इस भाव बोध पर हम यह कह सकते हैं कि अब्दुल बिस्मिल्लाह का अनुभव संसार–संसार के अन्य अनुभवों के बीच एक बहुत बड़े परिवर्तन को यदि नहीं भी ला पाता तो कम से कम उसके लिये आधार तो देता ही है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह इस पतनशील क्रूरताओं से ग्रस्त सम्बन्ध रूप से असुन्दर, विसंगतियों, रूढ़ियों, अनास्था आदि घटनाओं के बीच जिन्हें रोज अनुभव करते रहे हैं उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन की चर्चा करते दिखायी पड़ते हैं। उनकी दृष्टि में मानवीय मूल्यों और प्रेम सहयोग आदि की बुनियादी वैचारिक धारणाओं को सामाजिक यथार्थ और आवश्यकता के रूप में व्यक्त किया जाना चाहिए।

निजी अनुभव के विकास क्रम में उनकी मान्यता रही है कि कोई भी रचना मानवीय स्थितियों से अपनी सम्बद्धता और अपने अनुभवों में निजता की रचना भूमि तैयार करे और इसी के बल पर अनुभव जगत को उसके संवेदना संसार को व्यापक बनावे। शोषण और अन्याय के वैयक्तिक अनुभवों को सामाजिक संदर्भों से जोड़े और वस्तुस्थिति की सही पहचान दे।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की जड़ीभूत संघर्ष चेतना के हिमायती साहित्यकार रहे हैं। उनका क्रान्तिकारी युद्ध चेतना और संस्कृति की सीमान्तों पर होती है। जिसके जरिये वह मौजूदा सामाजिक ढाँचे के निहित स्वार्थवादी तत्वों से वास्तविकता के एहसास को गहरा सकती है। सत्ता के स्वामियों, बिचौलों, दलालों और समाज के ठीकेदारों के मुखौटों का छद्म नोच सकती है और ज्यादा से ज्यादा वह जनमानस की निष्प्राणता और जड़ीभूत संघर्ष चेतना को तराश देती हुई बदलाव की मानसिकता के क्षेत्र को अधिक व्यापक बना सकती है।

वे परिस्थितियों के निरन्तर रूढ़िग्रस्त होते हुये दबाव का विश्लेषण करते हैं और इनके बीच पिस रहे साधारण जन का अंकन करते हैं। राजनीतिक परिवेश के रचना संसार के प्रति अब्दुल बिस्मिल्लाह जी सचेष्ट कवि हैं। वे मूलतः राजनीति के विपक्ष के कवि हैं। इसलिए वे तद्युगीन लम्पट राजनीति की गहरी तहों तक उतरते हैं और उनके चरित्र का पर्दाफाश करते हुये ललकार भरे अन्दाज में अपने निजी अनुभव को व्यक्त करते हैं। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की दिशायें खोजने का सार्थक सवाल उठाया है।

कहानी, उपन्यास, नाटक, समीक्षा, निबन्ध, आत्म कथानकों एवं अपनी कविता में बिस्मिल्लाह मूल कथ्य को एक ऐसे पात्र के साथ सम्बद्ध कर देते हैं जो कोमल भावनाओं के रिस्ते का सम्वाहक है और तद्युगीन अनुभवों को समस्याओं के समाधान के रूप में अपने मौलिक संवेदनों पर उतार देते हैं। उनके जीवन में एक के बाद दूसरी आपदा आती रहती है जिससे व्यक्ति का सामान्य जीवन क्रम अस्त–व्यस्त हो जाता है। यह आपदा कभी–कभी प्रकृति की देन है पर अधिकांश मनुष्य निर्मित होती है जिससे व्यक्ति लक्ष्य भ्रष्ट हो जाता है। इस प्रकार वह अपने युग जीवन की सच्चाइयों को यथार्थमय संदर्भों में चित्रित करते हैं।

वेदनानुभूति अब्दुल बिस्मिल्लाह साहित्य का प्रधान निजी अनुभव है। जगत तथा जीवन की निस्सारता से व्यथित होकर उन्होंने दुःखवाद का सृजन किया है। उन पर महात्मा बुद्ध के ''सर्व दुःखस्'' की भावना का प्रत्यक्ष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ ही उनका व्यक्तिगत सुख–दुःख भी उसके प्रति उत्तरदायी है। उनकी यह वेदनानुभूति मानव जीवन को निष्क्रिय न बनाकर उसमें आशा का संचार करने तथा विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। निजी अनुभव के परिप्रेक्ष्य में यह कहना समीचीन लगता है कि बिस्मिल्लाह की रचनाओं के सृजन में उनकी वैयक्तिक वेदना और करुणा विश्वप्रेम तथा मानवता रूप ग्रहण कर जीवन को नयी दिशा तथा अभिव्यक्ति देने में सर्वथा सक्षम है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह एक ऐसे साहित्यकार थे जिनकी रचनाओं में अनेक समस्याओं का समावेश दिखायी देता है। अतः यह कहना समीचीन लगता है कि बिस्मिल्लाह ने अपने निजी अनुभवों के माध्यम से उनकी उर्जस्वी भाव बोध और कल्पनात्मक अभिव्यक्तियों ने देश काल के अनेक चित्र उपस्थित किये हैं। सामाजिक जीवन का वैषम्य देश की दशा का चित्रण दीन, दुखियों के दुख दर्दपूर्ण जीवन की झलक, धार्मिक अंधविश्वासों की दशा, उनके रचना संसार में सहज ढंग से विद्यमान है। इसके साथ ही तीव्र गति से बदलती हुई राजनीतिक गतिविधियों के स्वार्थावृत्ति का भी चित्रण हुआ है।

निष्कर्ष

अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनात्मक प्रतिभा यथार्थ की भूमि ग्रहण करती है और युग के वातावरण में सांस लेती है। युग से उसका अनिवार्य और अविच्छिन्न सम्बन्ध होता है। समसामयिक समस्याओं और ज्वलन्त प्रश्नों से उनका भाव हृदय आन्दोलित रहा है। यद्यपि हर साहित्यकार की रचना युग से प्रभावित होती है।

किन्तु अब्दुल बिस्मिल्लाह अपनी रचना से युग को प्रभावित कर रहे हैं। वे अपने समग्र उपन्यासों और कहानियों में स्वयं कथानायक की तरह अपने आत्मकथात्मक दृष्टिकोण को समसामयिक समस्याओं तथा गतिविधियों को जोड़ते हुए अपने साहित्य का सृजन करते हैं। अतएव यह कहा जा सकता है कि अब्दुल बिस्मिल्लाह एक विशुद्ध मसिजीवी साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य के सहारे ही अध्यापन विधा से जुड़कर अपनी आजीविका चला रहे हैं। उन्होंने सच्चाई और ईमानदारी के साथ एक हस्ताक्षर साहित्यकार के रूप में अपना स्वतंत्र जीवन यापन किया यद्यपि इसके लिये उन्हें घोर संघर्ष भी करना पड़ा और वे मन से क्षत–विक्षत और असंतुलित भी हो गये फिर भी उनकी जीवन–दृष्टि साहित्यकारों को स्वतंत्रता और स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा देता रहेगा।

सन्दर्भ

1. समर शेष है, पृष्ठ 66, अब्दुल बिस्मिल्लाह.
2. झीनी–झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ 13, अब्दुल बिस्मिल्लाह.
3. दंतकथा, पृष्ठ 19, अब्दुल बिस्मिल्लाह.
4. समकालीन कथा साहित्य का स्वरूप, पृष्ठ 130, सं. चंद्रदेव यादव.
5. समकालीन कथा साहित्य का स्वरूप, पृष्ठ 127, सं. चंद्रदेव यादव.
6. साहित्य और मनोविज्ञान, पृष्ठ 5, देवेन्द्र इस्सर.
7. श्री महर्षि की प्रेरणा, पृष्ठ 119, अरविन्द.
8. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 17, डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय.
9. आधुनिक कविता और युग दृष्टि, पृष्ठ 45, डॉ. शिव कुमार मिश्र.
10. छायावादोत्तर काव्य की सामाजिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 21, डॉ. कमला प्रसाद.

11. A Premier of Freudian Psychology - Calvins Hall, Page 15.
12. श्री अरविन्द की प्रेरणा – विलियम जेम्स का कथन, पृष्ठ 118.
13. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा, पृष्ठ 126, गोइटे गेट.
14. ट्रेडीशनल एण्ड इन्डीविजुअल टैलेन्ट (निबन्ध), इलिएट.
15. Psychology and Literature, Modern Man in Search of Soul, Page 190, C.G. Jung.
16. Introduction to Social Psychology, Page 105-106, M.C. Dougall.
17. Psychology, Page 338, R.S. Wood Worth.
18. Introduction to Social Psychology, Page 140, M.C. Daugall.
19. निराला की साहित्य साधना–2, पृष्ठ 52, रामविलास शर्मा.